National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 45-48
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. प्रदीप कुमार मीणा
सहायक आचार्य – साहित्य,
ति. श्री. गो. राजकीय आचार्य संस्कृत-महाविद्यालय, नाथद्वारा,
जिला- राजसमन्द, राजस्थान।

Correspondence:
डॉ. प्रदीप कुमार मीणा
सहायक आचार्य – साहित्य,
ति. श्री. गो. राजकीय आचार्य संस्कृत-महाविद्यालय, नाथद्वारा,
जिला- राजसमन्द, राजस्थान।

संस्कृतानुरागीनां वक्तव्येषु संस्कृतस्य प्रथिति-लक्षणानां च विश्लेषणम्

डॉ. प्रदीप कुमार मीणा

शोधसारांशः- यदि मुख्यविषयः सारांशरूपेण प्रस्तुतः भवति तर्हि संस्कृतं निःसंदेहम् अमरभाषा इति वक्तुं शक्यते। संस्कृतस्य महत्त्वं न केवलं भारते अपितु सम्पूर्णे विश्वे ज्ञायते। अस्मिन् भाषायां निहितः विशालः ज्ञान-भण्डारः एतावत् विशालः अस्ति यत् अद्यतन-वैज्ञानिकाः अपि प्राचीन-रहस्य-समाधानं कर्तुं न शक्तवन्तः। सृष्टेः आरम्भात् अन्त्यपर्यन्तं चर्चा अस्याः भाषायाः ग्रन्थेषु लिखिता अस्ति। अत एव न केवलं भारते अपितु विश्वे सर्वेभ्यः संस्कृतप्रेमिभिः अस्य विशालज्ञानस्य विषये अलङ्कृतानि व्यञ्जनानि भाषासाधकानां समक्षं प्रस्तुतानि, प्रशंसितानि, यत् अस्य शोधपत्रस्य माध्यमेन सामर्थ्यानुसारं शोधकर्तृभ्यः पाठकेभ्यः च सादरं प्रस्तुतं भवति।

कूटशब्दः अमूल्यानि उद्धरणं, चेतनचित्तः, आध्यात्मिकं ज्ञानम्, विस्तृतं शब्दावली, अमूल्यं निधिः, सर्वव्यापी, मातृभाषा, सञ्जीवनी, संपत्तिः, शब्दसंपत्तिः, राजभाषा, अस्माकं ज्योतिः, शाश्वतं ज्ञानम्, दिव्यभाषा, तेजयुक्तः, अन्वेषणादि।

विषयप्रविष्टि- आधुनिकविद्वांसः मते पञ्चसहस्रवर्षेभ्यः संस्कृतभाषायाः अखण्डप्रवाहः प्रवहति। अनेन माध्यमेन भारतस्य उत्तमप्रतिभा, अमूल्यचिन्तनं, चिन्तनं, प्रज्ञा, सृजनशीलता, वैचारिकप्रज्ञा च व्यक्ता अभवत्। अद्यत्वे अपि अस्याः भाषायाः माध्यमेन सर्वेषु क्षेत्रेषु पुस्तकनिर्माणस्य कृशधारा अबाधतया प्रवहति। परन्तु यदि भारते संस्कृतभाषायाः प्रयोगस्य निरोधस्य न्यूनीकरणस्य वा विषये प्रकाशः क्षिप्यते तर्हि आश्चर्यस्य विषयः अस्ति, केचन जनाः वदन्ति यत् संस्कृतस्य कठिनत्वात् अस्याः भाषायाः प्रयोगः न्यूनीकृतः अस्ति। परन्तु विश्वस्य कठिनतमा भाषा चीनीभाषा अस्ति, तर्हि ते चीनीभाषायाः प्रयोगं किमर्थं न त्यक्तवन्तः। अतीव विचित्रं यत् संस्कृतं अस्माकं समाजात् अन्तर्धानं जातं, तस्य स्थाने हिन्दी-आदि-भाषाः स्थापिताः। संस्कृतं विकृत्य हिन्द्यादीनां भाषाणां निर्माणं जातम् इति भाति। कश्चन संस्कृतभाषायाः नाशं कर्तुं प्रयतितवान् आसीत् अतः भिन्नस्थानेषु भिन्नाः भाषाः तस्मात् निर्मिताः अभवन् तथा च एतत् कर्तुं एकमेव कारणं भवितुम् अर्हति, यतः अस्माकं सर्वे वेदाः प्राचीनग्रन्थाः च ये ज्ञानरहस्यपूर्णाः सन्ति ते सर्वे संस्कृते एव सन्ति। ये संस्कृतभाषायाः नाशं कर्तुं प्रयतन्ते स्म ते न इच्छन्ति स्म यत् सर्वे संस्कृतेन लिखितवेदपुराणानां ज्ञानं प्राप्य रहस्यानि उद्घाटयितुं शक्नुयुः। केचन जनाः मन्यन्ते यत् आधुनिकविज्ञानस्य जन्म संस्कृतस्य किञ्चित् ज्ञानं बहिः आगमनात् अभवत् । कारणं यत्किमपि भवतु, अस्मिन् नवयुगे अस्माकं सम्मुखं यत् प्रकारस्य संस्कृतज्ञानं वर्तते तत् युगपर्यन्तं विकसितम् अस्ति तथा च एतावता ज्ञानस्य आधारेण संस्कृतस्य प्रशंसकाः अस्याः भाषायाः विषये अमूल्यानि उद्धरणं प्रस्तुतवन्तः ये प्रत्येकस्य संस्कृतप्रेमिणां कृते भविष्यत्पुस्तकस्य च कृते आदर्शाः सन्ति। यस्य संक्षिप्तः परिचयः यथा-

1.SIR WILLIAM JONES (1746-1794) came to India as a judge of the Supreme Court at Calcutta. He pioneered Sanskrit studies. His admiration for Indian thought and culture was almost limitless. He observed as long ago as 1784– **"The Sanskrit language, whatever be its antiquity, is of a wonderful structure; more perfect than the Greek, more copious than the Latin and more exquisitely refined than either: yet bearing to both of them a stronger affinity, both in the roots of verbs, and in the forms of grammar, than could possibly have been produced by accident; so strong indeed, that no philologer could examine them all without believing them to have sprung from some common source which perhaps no longer exists..."**[1]

2.ALAIN DANIELOU (1907-1994) son of French aristocracy, author of numerous books on philosophy, religion, history and arts of India and perhaps the first European to boldly proclaim his Hinduness. He settled in India for fifteen years in the study of Sanskrit. He had a wide effect upon Europe's understanding of Hinduism. He has observed- **"The creation of Sanskrit, the "refined" language, was a prodigious work on a grand scale. Grammarians and semanticists of genius undertook to create a perfect language, artificial and permanent, belonging to no one, that was to become the language of the entire culture. Sanskrit is built on a basis of Vedic and the Prakrits, but has a much more complex grammar, established according to a rigorous logic. It has an immense vocabulary and a very adaptable grammar, so that words can be grouped together to express any nuance of an idea, and verb forms can be found to cover any possibility of tense, such as future intentional in the past, present continuing into the future, and so on. Furthermore, Sanskrit possesses a wealth of abstract nouns, technical and philosophical terms unknown in any other language. Modern Indian scholars of Sanskrit culture have often remarked that many of the new concepts of nuclear physics or modern psychology are easy for them to grasp, since they correspond exactly to familiar notions of Sanskrit terminology."**[2]

3. डॉ॰ राधाकृष्णन (1957) के अनुसार – "संस्कृत अनेक भाषाओं की जननी है द्रविड़ भाषाओं पर भी इसका प्रभाव है। आज भी भारत के विभिन्न भू-भागों के मध्य संपर्क की यह सामान्य भाषा है और इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि, यह जीवित भाषा नहीं है। संस्कृत साहित्य का अत्यधिक प्रभाव भारत में ही नहीं वरन्, एशिया के अन्य भागों में भी है। संस्कृत ने हम भारतीय लोगों के मन पर इतनी छाप छोड़ी है जितना हम चेतन मस्तिष्क से जान भी नहीं पाते। एक दृष्टि से संस्कृत साहित्य राष्ट्रीय है, किन्तु उसका उद्देश्य सार्वभौमिक रहा है। इसलिए जो व्यक्ति एक संस्कृति विशेष के अनुयायी नही थे वें भी इस भाषा के प्रति आकर्षित हुए थे।"[3]

4. डॉ॰ सम्पूर्णानन्द महोदय के शब्दों में – आपने कहा है कि "जो लोग यह कहते हैं कि संस्कृत भाषा का समय बीत गया, वह गलत सोचते हैं। संस्कृत न केवल भारत में बल्कि समस्त विश्वजगत् में व्याप्त है। जो सन्देश इस भाषा में है वे अन्यत्र नही है। संस्कृत में बहुमूल्य विभूतियाँ पड़ी हुई है जो यह लांछन लगाते है कि संस्कृत भाषा मातृभाषा है, वह गलत सोचते हैं। संस्कृत जीवित ही नहीं बल्कि मुर्दों के लिए संजीवनी है। हम चाहते हैं कि संसार में काफी लोग संस्कृत के जानने वाले हो।"[4]

5. भूतपूर्व प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में– "यदि मुझसे पूछा जाए कि भारत की सबसे विशाल सम्पत्ति क्या है और उत्तराधिकार के रूप में सर्वोत्तम कौन सी वस्तु प्राप्त हुई है तो मैं निसंकोच उत्तर दूंगा, कि वह सम्पत्ति संस्कृत भाषा व उसका साहित्य तथा उसके भीतर जमा सारी पूंजी ही है।"[5]

6. डॉ॰ सी॰ वी॰ रमन ने संस्कृत आयोग के समक्ष कहा था "कि केवल संस्कृत को ही देश की राजभाषा घोषित कर देना चाहिए। संस्कृत भाषा आज भी हमारे दैनिक जीवन की संबल है और जीवन को गतिशील बनाने की प्रेरणा के रूप में शरीर तत्व में निहित है।[6]

7. माननीय श्री नरहरि विष्णु गाडगिल[7] का कहना है कि, "संस्कृत भारत का लालित्य सौन्दर्य, शैली, शब्दसम्पत्ति, गतिशीलता, संस्कृत वांग्मय में प्रतिपादित विचार, ज्ञान और अध्यात्मविद्या, जब मन और आंखों में आती है, तब यह सारी सम्पत्ति लोगों के लिए उपयोगी हो, यह इच्छा स्वभाविक ही है 19वीं शताब्दी में जितने भी व्यक्ति विकास के लिए आगे बढ़े, उनमें सभी संस्कृत पंडित थे। उन्होने संस्कृत विद्या से ही प्रेरणा प्राप्त की थी, जैसे- राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, लोकमान्य तिलक और महामना मालवीय जी।"

8. श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार के शब्दों में- "भारतीय जीवन को असीम शक्ति से समन्वित करने का श्रेय संस्कृत भाषा और साहित्य को है, जिसमें आध्यात्मिक, नैतिक, साहित्य, सामाजिक राजनीतिक आदि अनेक दृष्टि से भारतीय जीवन को प्रेरणा दी है और सप्राण बनाया है सदा की भॉति आज भी संस्कृत की अवहेलना का अर्थ होगा, अखंडता को खंड-खंड करना, शक्ति के स्रोत को बंद करना अपितु भारतीय जीवन के लिए चिता का निर्माण करना। प्रादेशिक और आधुनिक भाषाओं को अवश्य महत्व दें, उनके विकास के लिए अधिकाधिक प्रयास करें, किंतु यह कार्य तब तक संपन्न नहीं होगा जब तक की संस्कृत भाषा और साहित्य को भारतीय जीवन में समुचित स्थान नहीं मिलता।"[8]

9. इस प्रकार आज से कई वर्ष पूर्व उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल **श्री के॰ एम॰ मुंशी**[9] ने कहा था की संस्कृत के ज्ञान के बिना कोई भी भारतीय अपनी परंपरा के मूल्यों को समझ नहीं सकता, न हीं इससे प्रेरणा ग्रहण कर सकता है, न हीं वह भारत का सही अर्थ में प्रतिनिधित्व कर सकता है।

10. संस्कृत विषय भारतीय परिवार की प्रमुख भाषा है लैटिन तथा ग्रीक भाषाओं पर भी संस्कृत का प्रभाव पड़ा है। इसलिए **विलियम जोंस**[10] ने कहा था- "संस्कृत ग्रीक विषय से भी अधिक पूर्ण, लैटिन से भी अधिक व्यापक एवं सक्षम और दोनों से अधिक सुसंस्कृत है।" जहाँ तक संस्कृत विषय का प्रश्न है संस्कृत विषय समस्त आधुनिक भारतीय विषयों की जननी है। इन भाषाओं की समग्र पदावली संस्कृत शब्दों के तत्सम एवं तद्भव शब्दों द्वारा ही निर्मित विकसित एवं समृद्ध हुई है।

11. एक बार अमेरिका से दिल्ली आए हुए **डॉ॰ फैलिक्स बालई**[11] ने कहा था, कि "संस्कृत सभी हिंदू यूरोपियन भाषाओं की जननी है। अमेरिका में संस्कृत के प्रभाव का यह भी ज्वलंत प्रमाण है कि वहाँ के कई शहरों और नगरों के नाम संस्कृत के अपभ्रंश रूप है- कालीवाल (कालिग्राम), कालमक (कालमुख), चयंत (जयंत) इत्यादि। जर्मनों की संस्कृत पढ़ने की रुचि शुरू से ही है बर्बर, बलवर आदि संस्कृत के विद्वान यही हुए थे। मैक्समूलर का भी अधिक समय यहीं बीता था।"

12. प्रो॰ बोलेनल की अभिव्यक्ति- "इसे संस्कृत अथवा संपूर्ण करना सर्वथा न्यायसंगत है। दूसरी भाषाओं में, जो गुण पृथक-पृथक उपलब्ध होते हैं उन सभी का एक साथ संस्कृत में संग्रह हो गया है।"[12]

13. संस्कृत आयोग[13] के प्रतिवेदन में उल्लिखित है - "भारतीय सभ्यता वैदिक काल से जन्म लेकर लगभग 4000 वर्षों तक संस्कृत द्वारा ही अपनी अभिव्यक्ति करती है।" इसी प्रकार संस्कृत विषय के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. राजेंद्र प्रसाद[14] ने कहा था "संस्कृत का मूलाधार आध्यात्मिकता है, जो भारत की विश्व को एक अनोखी देन है।"

14. डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद[15] के अनुसार- "संस्कृत वांग्मय भारत की ही क्यों, सारी मनुष्य जाति की अमूल्य निधि है, उसकी प्राचीनता, उसकी व्यापकता, उसकी विशालता, उसकी सुंदरता और मधुरता सभी तो ऐसी है, जिनमें न केवल मानव की आज तक की संस्कृति का सारा इतिहास ज्योतिर्मयी हो उठता है वरन् मानव का हृदय आनंद से विभोर हो जाता है।"

15. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी[16] ने कहा था कि "संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय संस्कृति का चिरसंचित ज्ञान भरा है। बिना संस्कृत पढ़े कोई अपने को पूरा भारतीय और विद्वान नहीं बना सकता।"

16. काका कालेलकर के अनुसार- "मराठी, गुजराती, बंगाली आदि भाषायें संस्कृत कुटुंब की है। संस्कृत भाषा संस्कार समृद्धि और विकास की क्षमता की दृष्टि से दुनिया की प्राचीन व अर्वाचीन किसी भी भाषा से कम नहीं है। जो विरासत में हमें मिली है, उस पर हमें अभिमान है। संस्कृत का द्रोह हम से कभी न होगा। अगर हमने मध्यकाल में अंधे बनकर देववाणी का प्रचार न रोका होता तो हमारे देश आज देश की आज जैसी दुर्गति हुई है वैसी न हुई होती।"[17]

17. आचार्य नरेन्द्र देव के अनुसार- "स्वाधीन होने पर हमारा उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है हमारा कर्तव्य है कि संस्कृत विद्या के अध्ययन को हम पाठ्यक्रम में विशिष्ट स्थान दें और अन्वेषण के कार्य को प्रोत्साहन दें। आधुनिक युग के महापुरूषों के कारण तथा अपनी प्राचीन संस्कृति के कारण हमारा संसार में आदर है यह खेद का विषय होगा कि, हम इस आवश्यक कर्तव्य की ओर उचित ध्यान न दें और संस्कृत वाङ्मय की रक्षा और वृद्धि के प्रति उदासीनता दिखायें। संस्कृत वाङ्मय आदर और गौरव की वस्तु है और उसका विस्तार तथा गाम्भीर्य हमें चकित कर देता है।"

18. सर मिर्जा इस्माइल ने बैंगलोर के वीर भद्रप्पा संस्कृत विद्यापीठ के रजत जयंती महोत्सव पर 10 फरवरी 1940 से उन्होंने इस संबंध में अपने विचार दियें हैं- "मैं नहीं जानता कि यह अत्युक्ति मानी जाएगी या नहीं, यदि मैं कहूँ कि संस्कृत का अध्ययन बुद्धि विलास से बढ़कर भी कुछ और है। यदि यह मानना स्पष्ट कठिन होगा कि इस भाषा या इसके साहित्य का ज्ञान साधारण जन के व्यावहारिक जीवन में अपेक्षित है, तो मैं समझता हूँ कि यह पूछ कि अयुक्त न होगा। यदि मैं कहूँ कि हमारे शिक्षित युवक अपने संज्ञय तथा शक्ति का एक भाग इस महिमामयी तथा आश्चर्यमयी भाषा का एक अच्छा सा ज्ञान उपार्जन करने में लगाकर अपना हित ही करेंगे। उन्हें इतिहास के अध्यवसायी विद्यार्थी के सम्बन्ध में तो जो भारत के अतीत की महत्ता समझना चाहता है, मुझे सन्देह है कि वह संस्कृत के बिना सचमुच काम चला सकता है। क्योंकि भारती की प्राचीन सभ्यता का सार ही संस्कृत साहित्य है।"[18]

19. श्री हरीभाऊ उपाध्याय (अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, 1964) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि समाज में चारित्रिक बल, नैतिक उत्थान, सादा जीवन और उच्च विचारों के लिए जितना संभव हो, संस्कृत का घर-घर में प्रचार हो। मैं समझता हूं कि अधिकांश भारतीयों को किसी न किसी रूप से संस्कृत का थोड़ा बहुत ध्यान अवश्य होता है। भारतीय षोड्श संस्कारों का संबंध हम से है और संस्कारों को करने का संबंध संस्कृत से है। संस्कृत हमें

पूर्वजों से विरासत में प्राप्त हुई है और इसका विकास करना हमारा नैतिक दायित्व है।[19]

20. **डॉ॰ अग्रवाल महोदय** का मत यह है कि "पाणिनि के समय से पूर्व ही संस्कृत भाषा सविस्तृत क्षेत्र के जनसामान्य की भाषा रही है। अष्टाध्यायी के अध्ययन से हम इसी निष्कर्ष पर आते हैं। अतः उसे मात्र विद्वत समाज की ही साहित्यिक भाषा कहना कदापि उचित न होगा।"[20]

21. संस्कृत भाषा एवं साहित्य के विषय में **डॉ. वाचस्पति गैरोला** का यह कथन है कि "राम, सीता, कृष्ण, राधा, भीम, युधिष्ठिर, नल-दमयंती आदि हमारे राष्ट्रीय चरित्र के नायक हैं। उनकी कथायें समस्त भारत की सभी भाषाओं के साहित्य में पाई जाती है। यह संस्कृत के माध्यम से ही सभी भाषाओं के साहित्य में गई। अतः संस्कृत भाषा का शब्द भंडार अत्यंत विशाल है।"[21]

संस्कृतम् अन्तर्राष्ट्रीयैकतायाः भाषा अस्ति- "संस्कृतभाषायाः महत्त्वं केवलं राष्ट्रस्य एकतायाः सूत्रे बन्धनं यावत् सीमितं नास्ति, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीयस्तरस्य अपि तस्य प्रभावः स्पष्टतया दृश्यते।" डॉ. रघुवीर-राहुलसांकृत्ययनयोः आधुनिकसंशोधनेन सिद्धं जातं यत् अद्यत्वे अपि एशियादेशेषु संस्कृतसाहित्यं आदरपूर्वकं पूजनेन च दृश्यते। उपर्युक्तानि उद्धरणं विहाय एकविंशतितमशतकस्य अस्मिन् युगे भारते संस्कृतस्य नवीनताः तीव्रगत्या वर्धिताः। अनेके आधुनिकलेखकाः संस्कृतं विश्वमञ्चे सफलतया प्रस्तुतयन्ति। भारतसर्वकारः राज्यसर्वकाराश्च संस्कृतविषये अवगताः सन्ति। नूतनानि संस्कृताध्ययनकेन्द्राणि उद्घाटितानि सन्ति।

सारतः वयं वक्तुं शक्नुमः यत् संस्कृतस्य महत्त्वं न केवलं भारते अपितु अन्तर्राष्ट्रीयस्तरस्य अपि अस्ति। रूसदेशस्य मास्को, लेनिनग्राड् इत्यादिषु विश्वविद्यालयेषु संस्कृतस्य उच्चस्थानं वर्तते। एतेषु विश्वविद्यालयेषु छात्राः 'भारतीयभाषाभूमिका' इति पाठ्यक्रमे संस्कृतविषये शोधं कुर्वन्ति। संस्कृतव्याकरणं, संस्कृतस्य मूलभूतपुस्तकानि च रूसीभाषायाः माध्यमेन बहुसंख्येन प्रकाशितानि सन्ति। बहुकालपूर्वं रूसदेशात् आगतः डॉ. लुईस् रेणुः उक्तवान् आसीत् यत् - "विश्वस्य सर्वाः भाषाः संस्कृतेन प्रभाविताः सन्ति। एशियायाः अनेकदेशानां भाषाः संस्कृतशब्दैः परिपूर्णाः सन्ति।

संदर्भ सूची-

[1] Nehru, P. Jawaharlal : Discovery of India, Page 165

[2] Danielou Alain : A Brief History of India, Page 57-58

[3] प्रेसिडेंट राधाकृष्णन स्पीचेज एंड राइटिंग, पब्लि॰ डिवी॰ गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 1965 / मद्रास संस्कृत कॉलेज, डॉ॰ राधाकृष्णन का 1957 के दीक्षांत समारोह का अध्यक्षीय भाषण।

[4] डॉ॰ सम्पूर्णानन्द 'संसार', 2 नवम्बर 1948

[5] मलैया, के. सी. 'भारतीय शिक्षा आयोग और समितियाँ' से उद्धृत भूतपूर्व प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू के विचार।

[6] रमन डॉ॰ सी॰ वी॰ का संस्कृत आयोग के समक्ष भाषण।

[7] गाडगिल श्री नरहरि विष्णु के विचार, संस्कृत संस्थान की पत्रिका से उद्धृत।

[8] पोद्दार श्री हनुमान प्रसाद, सम्पादक, कल्याण गोरखपुर 10/11/1965

[9] मलैया श्री के॰ एम॰ मुंशी, के. सी. 'भारतीय शिक्षा आयोग और समितियाँ' से उद्धृत।

[10] जॉन्स विलियम, गैरोला वाचस्पति, 'संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' से उद्धृत।

[11] बालई डॉ॰ फैलिक्स का कथन, कैलाशनाथ 'भारतीय समाज एवं संस्कृत' से उद्धृत।

[12] उपाध्याय आचार्य बलदेव, 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' से उद्धृत।

[13] Report of the Sanskrit commission page 71

[14] प्रसाद डॉ. राजेन्द्र के विचार, मलैया, के. सी. 'भारतीय शिक्षा आयोग और समितियाँ' से उद्धृत।

[15] प्रसाद डॉ. राजेन्द्र, कोचर, एस. के. "प्रिवेटल इश्यूज इन इण्डियन एजुकेशन" से उद्धृत।

[16] गांधी महात्मा, मिश्र आचार्य दुर्गाशंकर, 'भारतीय शिक्षा का इतिहास' से उद्धृत।

[17] काका कालेलकर- 'विश्ववाणी' नवंबर, 1945

[18] इस्माइल सर मिर्जा द्वारा वीरभद्रप्पा संस्कृत विद्यापीठ, बैंगलोर के रजत जयंती समारोह में 10 फरवरी 1940 दियें
गये भाषण का अंश।

[19] उपाध्याय श्री हरीभाऊ द्वारा राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, 1964 में दिये गये भाषण का अंश, राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन स्मारिका, जनवरी-फरवरी 1964 से उद्धृत।

[20] डॉ. अग्रवाल, पाणिनि कालीन भारतवर्ष : पृ. सं. 5

[21] गैरोला डॉ. वाचस्पति, संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. 3